ISSN No-2031-5063 Vol.1,Issue.VI/Dec 2011pp.1-4

Research Paper

“आतंकवाद - एक जागतिक समस्या”

प्रा. डॉ. के. बी. पाटील
श्रीमती एच. आर. पटेल कला
महिला महाविद्यालय, शिरपूर
जि. धुळे.

प्रस्तावना

आतंकवादी संकल्पना पुरानीही है, फर्क सिर्फ इतना की उसकी व्याप्ती और स्वरूप बदलता रहता है, आज विश्वमें 200 से ज्यादा आतंकवादी संघटन है, 'समाज की असंतुष्टता' यह आतंकवाद की जड है, आतंकवाद 'सामाजिक संघर्षकी पध्दती' और समस्याकी निराकरण का उपाय इस रूप में जाना रहा है, उसके राजकीय, सांस्कृतिक धार्मिक कारण अनेक है, धर्मभेद धर्मसत्ता लाद दिये जाते है, जातिवाचक पक्षपात भी है, इनको भी अपना अस्तित्व रखना जरूरी हो जाता है, बहुत बार राजनैतिक नेता शासन कई प्रदेशोंकी तरफ ध्यान नही देते, उनका विकास रूक जाता है, वहाँ आर्थिक भेदभावनिर्माण होता है, वहींसे आतंकवादकी शुरूवात होती है, ऐसा समाज पहले अपनी नाराजगी शांततापूर्ण मार्ग से जताता है, बादमें थोडा हिंसाचार होता है, राजनैतिक नेता कडा रूख अपनाते है, और यह समुदाय आतंकवादी रूप ले लेता है,

आतंकवादी की व्याख्या अनेक अभ्यासकोने की है, यह देखना जरूरी है, कहाँ जाता हैं जिसमें कोई संघटित समुह योजनाबद्ध रूपमें हिंसात्मक कियाओंके प्रयोगद्वारा किसी व्यक्ती समुदाय या उसके एक बृहत भागको भयभीत कर ह्यवाछिंतह सामुहिक उद्देश, उद्देशोंको प्राप्त करता है, ”

सामान्यतः हम जिस आतंकवादसे परिचित है उसका सरोकार अधिकांशतः सत्ता की राजनिती से है, फांसीसी उत्तर आधुनिकतावादी विचारक 'ज्यां बौद्रियआने आतंकवादको आधुनिक राजसत्ताके उपरी जनतंत्र मे निहीत निरंकुशतावाद का एक उत्तर आधुनिक प्रतिकार कहा है, '

“विशिष्ट दावा अगर शिकायत का प्रचार करनेके लिए सामान्य जमात अगर महत्वपूर्ण अंशमे 'दहशत' फैलाने के उद्देश से अपनाये गये बेकायदा हिंसाचार का तंत्र आतंक कहलाता है, ”

अमेरिका के State Department ने शासकीय कामकाजोंके लिए की गयी व्याख्या. “Terrorism is premeditated politically motivated violence perpetrated against non combatants targets by sub national groups clande stinine state agents.”

“आतंकवाद का मतलब राजनैतिक उद्देश से समाज मे दहशत पैदा करनेका संघटीत कोशिश है, ”

आंतरराष्ट्रीय आतंकवाद 1960 मे प्रारंभ हुआ, और गतिमानतासे विकसित हुआ, 'लैला खालदे'' इस पॅलिस्टिनी महिलाने पहली बार लंडन जानेवाले हवाई जहाज का अपहरण किया, प्छे इस आतंकवादी संघटन को शुरूमे यश प्राप्त हुआ,

यह आतंकवाद 'गनिमी युद्ध नही होता, क्योंकि युद्ध मे कई संकेत निभाये जाते है, सामान्य नागरिक महिला बच्चे इनपर हमला नही किया जाता, पर आतंकवादमें महिलायें बच्चे सामान्य नागरिक निष्पाप व्यक्ति आतंका का भाजन बन्ते है,

इस आतंकवादमें एक व्यक्ति नही होती, उनका आतंकवादी संघटन होता है, उनका दृष्टीकोन स्वप्नरंजित और अवास्तव होती, आंतरराष्ट्रीय स्तर पर 1960 मे बदलाव आया, कार्सिका स्कॉटलंड वेल्स इन प्रदेशोंमे 'वाशिंक' आतंकवादी संघटनकोंका निर्माण हुआ, फान्स में 'ॲक्शन डायरेक्टर' इटलीमें रेड आर्मी जर्मनीमें 'वेदर मॅन हाफ' और इंग्लंड में ग्रुप संघटकोंकी निर्मिती हुई,

आतंकवादी 'धक्का तंत्रका' उपयोग करते है, बॉम्ब विस्फोट कराते है, इस विस्फोटोमें प्राणहानी अगर कोई जखमी नही होता, सिर्फ नुकसान होता है, और आतंकवादी संघटनको प्रसिद्धी मिल जाती है, कभीकभी विस्फोट कराने की फुान पर धमकी दी जाती है, भगदड मच जाती है, उनका उद्देश सफल होता है,

आतंकवादी संघटन और उनका इतिहास जानना जरूरी हो जाता है,

इतिहास और आतंकवाद

आतंकवाद प्राचीन काल में भी था, इजिप्सियन और ॲसिटियन संस्कृतिमें आतंकवाद क बीज पाये जाते है,

स्पार्टा का 'आर्मी आतंकवाद विख्यात है, रोमन साम्राज्यमें दूर की प्रांत प्रजाको आतंकवाद का सामना करना पडा, मध्ययुगमें तैमुरलंग और नादीरशहा ये आक्रमक आये थे, फान्सीसी सम्राट 'चौदहवा लुई' मै राज्य हूँ, ह्यी ग तहए स्तातएह कहता था, फान्सीसी राज्यकांती के बाद 'दहशतका राज्य' खत्म हुआ, एर्ग्नि फ तएररेर का निर्माण हुआ, डॉटन रॉबेस्पिअर ने प्रजासत्ताक के खिलाफ लोगोंको और सोहलवे लुईइ और उसकी पत्नी मेरी अॅटाईनेट को गिलोटीनर चढा दिया, हिटलर, स्टॅलीन, मुसोलिनि इनका पाशवी आतंकवाद जाहीर है,

भारतपाक विभाजनसे पहले 1892 में कौन्सिल चुनाव के समय सर सय्यद अहमदखान को लगने लगा की हिंदू कौन्सिल में प्रवेश करेंगे तो अपना फायदा करा लेंगे, 1909 के कायदे मे मुस्लिम हिंदु अलगाव का बीज पाया जाता है, यही मस्लिमोंको अलग मतदारसंघ मिला था, 'सारे जहाँसे अच्छा हिंदोस्ता हमारा' यह गीत लिखने वाले महंमद इकाबल भी हिंदूओंमें रहना असुरक्षित समझने लगे और एक गॉव तो कही नां कही मुस्लिमोंका होना चाहिए ऐसा कहते है, सर सय्यद अहमदखान भी अल्पसंख्योंकोकी समस्यासे परेशान थे, इस असुरक्षितता की भावनाने ही सामुदायों मे अलगाव पैदा किया, इससे पाकिस्तान बना, और ये दंगे अभितक चल रहे है, और समस्या 'काश्मिरी प्रश्न' के रूपमें सामने है,

आतंकवादस्वरूप और कारण

इस्लामीक आतंकवादमें 'जिहाद' शब्दको महत्वपूर्ण माना जाता है, मो. पैगंबरने 'जिहाद' की संकल्पना बनाई ऐसा कहा जाता है, मिस्त्र में 'खाजीर' पंथीयों ने 'अर्ल जिहाद की स्थापना की, इस मतलबसे औरंगजेबने किया युद्ध भी जिहाद कहलाता है, जिहादी संघटन 'आयत' का दाखिला देता है, पाक महिनोके गुजर के बाद बुतपरस्तोंको खतम करो ऐसा कहा है, पर इसका उनको बादमें पछतावा हुआ था, उन्होंने अल्लाह की भक्ति शुरू की थी,

आत्यंतिक राष्ट्रवाद भी 'आतंकवाद' को जन्म देता है, उदा. भारतपर निष्ठा होनेवाले को पाकिस्तान का द्वेष करना चाहिए, ऐसा अलिखित तौर पे तय माना जाता है,

सद्य स्थितीमें अर्लकायदा के आतंकवादीयोंका आतंक फैला है, इस संघटनकी 40 शाखाएं है, उन्होंने संपूर्ण विश्वमें 'निजार्मएमुस्तफा' का निर्माण करने की घोषणा की है, ओसामाबिर्नलादने ने जैशएमोहम्मद हरकर्तउर्लअंसार, हरकर्तउर्लमुजाहिदीन, लश्करएए तोयबा ऐसी संघटना ओंको मदद करने की घोषणा

की, वांशिक संघटन अगर शोषित मजदुर वर्ग अदृश्य होता है, वास्तविक राजकीय आतंकवाद के निर्मितीमें इन दो घटकोंकी आवश्यकता होती है।

आतंकवाद के कारण

1. प्रसिद्धी आतंकवादी घटनाओंके पिछे एक लक्ष्य दावा अगर समस्या होती है, उनको मान्यता कैसी भी हो 'अच्छी या बुरी' मिलनी चाहिए, यह धारणा होती।

2. कट्टरवादी (मुलतत्वादी) विचारधारा (Fundamentalism) -

ओसामाबिनलादेन इस विचारधारा का पुरस्कार करता है, 2009 में लंदन मे हुए बॉम्बविस्फोट में इन विचारवाद संघटनोंका हाथ था, आतंकवादी कारवाई एक धर्मयुद्ध (जिहाद) और आतंकवादी मुज्जाउद्दीन (धर्मवीर) है, मनुष्य हत्या व्यक्ति अपहरण ये कृत्य आतंकवादी धर्मयुद्ध मानते है, यह कट्टरता प्राण गॅवाने का प्रशिक्षण देती है।

3. आतंकवादी मानसिकता

अमरिकी अभ्यासक पोस्ट कहते है, आतंकवादीमे न्यूनता की भावना होता है, बचपन में कुछ छिन जाने की भावना का जख्म और कमी की विचारधारा आत्यंतिक निराशावाद होता है।

4. प्रादेशिकवाद

सहिष्णूता धर्मनिरपेक्षता यह राजनैतिक नेताओंको खेलने के शब्द है, खाने के और दिखाने के दात अलग होते है, उदा. द्रविड मुन्नेत्र कझगम अबाम्हणवादी पक्ष बाम्हणविरोधी है, स्वतंत्र द्रविड स्थान की मॉग करता है, पंजाब में 'अकाली दल' शीख धर्म को आकमताका प्रतिक है, भाषिक प्रादेशिकता के कारण आंतक निर्माण होता है, सुवर्णमंदीर (अमृतसर) इस पवित्र धार्मिक स्थलमें छुपे आतंकवादीयोंपर इंदिराजी गांधीने 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' जैसा कडा कदम उठाया, परिणाम स्वरूप उनकी हत्या हुई।

आतंकवाद के प्रकार

अ. आत्मघाती आतंकवादी संघटन

आतंकवादी प्रस्थापित शासन के खिलाफ होता है, दहशतगर्द (आतंकवादी) स्फोटक अपने कमर में बॉधता है, लक्ष्यपर दृष्टी रखकर विस्फोट करता है, उसके शरीरके भी टुकडे होते है, 'टायमर' मशिनका उपयोग करता है, दिल्ली संसद भवन पर हुआ हमला और 911 का वर्ल्ड ट्रेड सेंटर का हवाई हमला आत्मघाती ही था।

ब. संगणक दहशतवाद (Cyber Terrorism)

21 वी सदी के आतंकवादी संगणक इंटरनेट चलानेमें माहीर होते है, श्रीलंका की ल.ट.ट.ई. इस आतंकवादी संघटन के पास नाविक दल और विमान दल भी है, ये संघटन (सॅटेलाईट) वापरते है, संगणक कृमी (कॉम्प्युटर व्हायरस) संगणक सुक्ष्मजंतू (बग) से (कॉम्प्युटर) खराब किये जाते है।

धार्मिक आतंकवादकी सबसे बडी समस्या हिंदुस्थानमें है।

देशांतर्गत राजनिती और आतंकवाद

राममंदीर, बाबरी मस्जिद राममंदीर और बाबरी मस्जिद मुद्दा 1984 मे शासन यंत्रणाकी अजेंडापर आया, 1949 में बाबरी मस्जिदमें रामलल्ला की मुर्तियॉ रखी गई, पं.जवाहरलाल नेहरूजीके मना करने के बादभी जी.बी.पंतजीने वही रखनेका आग्रह किया, 1986 में अदालत ने निर्णय दिया की पुजा करणे के लिए ताला खोला जा सकता है द्वार खुल गये, भा.ज.प. ने बाबरी मस्जिद विरोधी आंदोलन तीव्र किया।

नरसिंहरावजी के कार्यकालमें हिंदूत्ववादी संघटनाओंके आकमक जमावने मस्जिदपर हमल करके उसे गिरा दिया (6 दिसंबर 1992).

वोट बॅंक और राजनीती

इस राजनीतीमें हर पार्टी वोट बॅंक बनानेमें लगी है, धर्म जाती पिछडे वर्ग अनुसूचित दलित अल्पसंख्यांक इन नामापर वोट बॅंक तैयार की जाती है, लोकतंत्रका रूपांतर झुंडशाहीमें हुआ है।

केंद्र सरकारपर दबाव डालने पर 13 दिसंबर 2001 में संसद भवन पर हमला 'अफझल गुरूने' करवाया, बाबरी मस्जिदके गिरने के बाद दाऊद इब्राहीमने 'हवाला' कके माध्यमसे बॉम्ब विस्फोट करवाये, अभिनेता संजय दत्त के सजा के लिए भी राजनीती खेली गयी।

मस्लिम आतंकवादी थे उनका मुकावला करने के लिए हिंदूत्ववादी 'बजरंग दल और विश्वहिंदू परिषद' के आतंकवादीयोने भी बॉम्ब विस्फोट किये, 2003 में परभणी रहिमतनगर मस्जिद में 27 अगस्त 2004 में परभणी जिले के 'पुर्णा' गॉव की मस्जिदमें विस्फोट करवाये ऐसे सबुत 19 जुलाई 2006 के बंगरूळ फॉरेन्सिक सायंस प्रयोगशालामें किये गये ब्रेन मॅपिंग और नार्को ॲनालिसिस टेस्ट मे मिले।

देश विदेशोंमे आतंकवाद की समस्या है, और खतम करनेका प्रयास भी होता ही रहता है, स्वार्थी प्रवृत्ती आत्यंतिक राष्ट्रवाद राजनीती धर्मकारण (कट्टरता) के कारण आतंकवाद खत्म नही हो रहा, फिर भी उसे खत्म करना जरूरी है, मानवाधिकार के तहत राहतकी सांस लेना हर नागरिक का अधिकार है, और देशमें आतंक को रोकना लोकप्रतिनिधी और युवाओंका कर्तव्य है, पुलिस आर्मी भी इसे खत्म करनेमें जुटी है, 'झ' दर्जेकी सुरक्षा नेताओंको देने के बजाय पुलिस फोर्स को जनता और देश के सरक्षामें तैनात करना जरूरी है।

निष्कर्ष

1. आतंकवादी मानसिकता और न्यूनता की टीस से आती है।
2. प्रसिद्धी और प्रभाव दिखाने के लिए आतंकवादी विस्फोट कराते है।
3. 'कट्टरता' मुलतत्ववादी विचारसरणी मे बदलाव लाने के लिए आंतराष्ट्रीय स्तरेप प्रयत्नोंकी आवश्यकता है।
4. बढती जनसंख्या भी आतंकवादको जन्म देती है, कारण बेकारी और असुरक्षितता।
5. धर्म के नाम पर दंगे और कमी की भावना से आतंक खत्म करना वैश्विक जागृती है।
6. राजनीती एक मुठ्ठी वोट बॅंक मॉगती है, और आतंकवाद फैलानेमें सक्रीय रहती है।
7. ज्यादा और जल्दी पाने की चाहत आतंकवादको जन्म देती है।
8. नये पिढी को धर्माधिष्ठीत शिक्षा न देकर वसुधैव कुटुंबकम का पाठ पढाना चाहिए।
9. मानवतावादी दृष्टीकोनसे जनतंत्र न चलानेवाली पार्टी को चुनाव नही जिताना चाहिए।

संदर्भ साधन

1. समाजशास्त्र विश्वकोश (एनसायक्लोपीडिया ऑफ सोशियॉलॉजी) हरीकृष्ण रावत, पृष्ठ क. 407.
2. 21 व्या शतकातील दहशतवाद, प्रा.म.न. उदगावकर, डायमंड पब्लिकेशन्स पृष्ठ क. 9.
3. तत्रैव पृष्ठ क. 9.
4. दहशतवाद न्यूयॉर्क ते खैरलांजी, मिलिंद कीर्ती.
5. 21 व्या शतकातील दहशतवाद, प्रा.म.न.उदगावकर, डायमंड पब्लिकेशन्सपृष्ठ क. 4.
6. तत्रैव पृष्ठ. 6.
7. तत्रैव पृष्ठ. 6.
8. तत्रैव पृष्ठ. 2.
9. तत्रैव पृष्ठ. 3.
10. तत्रैव पृष्ठ. 13.
11. तत्रैव पृष्ठ. 14.
12. तत्रैव पृष्ठ. 18.
13. भारतातील राज्यांचे राजकारण, मोहन दिवाण प्रा.जयंत देवधर, प्रा.विवेक दिवाण पृष्ठ क. 51.
14. 21 व्या शतकातील दहशतवाद, प्रा.म.न.उदगावकर, डायमंड पब्लिकेशन्स पृष्ठ क. 18.
15. तत्रैव पृष्ठ क. 24.
16. नवभारत प्राप्त पाठशाला मंडळ, वाई संचलित मासिके संपा.श्री.मा.भावे.
17. भारतातील राज्यांचे राजकारण, डॉ.मोहन दिवाण, प्रा.जयंत देवधर, प्रा.विवेक दिवाण.